मूल्य : 120 रुपये

अंक : 162-163

उद्भावना

जन भावनाओं का साझा मंच

उद्भावना

ईरान विशेषांक

उद्भावना

वर्ष : 39, अंक 162-163

अप्रैल से सितम्बर 2026

संपादक मंडल

अजेय कुमार (संपादक)

प्रियदर्शन, मुशर्रफ अली,

विनीत तिवारी

विशेष सहयोग

जितेन्द्र भाटिया, योगेन्द्र आहूजा, गणेश विस्पुते, यादवेन्द्र, अशोक तिवारी

सहयोग

रामपाल कटवालया

प्रबंधकीय पता

ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया,

जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095

मो. 9811582902 E-mail:

pd.press@gmail.com

सभी चैक/ड्राफ्ट '**UDBHAVANA**' के नाम से *प्रबंधकीय* पते पर ही भेजें. जो पाठक हमारे अकाउंट में ऑन लाइन जमा करना चाहते हैं, वे कृपया निम्न सूचना देखें

अकाउंट	:	UDBHAVANA
अकाउंट न.	:	90261010002100
बैंक	:	Canara Bank
ब्रांच	:	राजेंद्र नगर, नई दिल्ली-60
IFSC	:	CNRB0019026

वार्षिक सदस्यता (4 अंक) : 400 रु.

आजीवन सदस्यता : 5000 रु.

आप इस नंबर 9811582902 पर गूगल पे, Paytm से भुगतान कर सकते हैं।

मूल्य : 120 रुपये

(डाक खर्च समेत)

ईरान विशेषांक

अपनी बात 3

ईरान की कहानियाँ

चीलें **-कादर अब्दुल्ला** 15

जनता का बालक,

सितार **-जलाल अल-ए-अहमद** 25

अड़तालीस सीढ़ियां **-पैक्सिमा मोजावेज़ी** 35

ईरान की कविताएँ

बक्ताश अब्तिन 62

सिमीं बेहबहानी 63

अजीता घरेमान 64

फनौस बहादोरवंद 65

परनिया अब्बासी 67

मोहम्मद बरजेगर 68

मोहम्मद काज़िम काज़िमी 68

ताहा मो'मिनी 69

महमूद एक्रामी'फर 70

ईरान पर कविताएँ

अंशु मालवीय 98

बोधिसत्व 103

अनिल गंगल 105

हेमंत कुकरेती 110

हमारी विरासत

युद्ध-नायक **श्रीकांत वर्मा** 113

साक्षात्कार :

आज़ादी एक डरावना सपना

भी हो सकती है! **-कादर अब्दुल्ला** 11

नासिरा शर्मा से **अजेय कुमार** की बातचीत 118

सईद नक़वी की **विनीत तिवारी** से बातचीत 149

यात्रा संस्मरण 160

कवि का कर्ज़, हुक्मे नादिरशाही,

ईरान के गिरफ्तार **असग़र वजाहत**

आलेख
ईरानः एक विश्लेषण **-मुशर्रफ़ अली** 71
ईरान युद्ध और अमेरिका की लाचारियां **-सत्येंद्र रंजन'** 80
ईरानी रीढ़-पर्शियन स्पाइन **-डॉ. हैदर अली** 86
बदलता हुआ ईरान **-लक्ष्मण सिंह देव** 90
ईरानी नैतिक पुलिस--गश्ते इरशाद **-मुशर्रफ़ अली** 57
शिक्षा में मानवीय संवेदनाओं का घोषणा-पत्र *'खुशियों का स्कूल'* **-प्रतिभा मिश्रा** 225

प्रतिरोध का साहित्य
घने अंधकार में खुलती खिड़की **-अंचित** 38
ईरानी स्त्रियों के लोकतांत्रिक संघर्ष के सांस्कृतिक पक्ष **-यादवेन्द्र** 40
(फ़रुग फ़रोख्ज़ाद, सिमीं बेहबहानी, तहेरेह सफ़रजादेह,
जालेह इस्फ़ाहानी की कविताएँ)
साहित्य सेंसरशिप **सेपिदेह जोदेयरी, फ़रिश्तेह अहमदी** 49

ईरानी सिनेमा
परंपरा, इतिहास और अंतर्दृष्टि! **-जितेन्द्र भाटिया** 181
इच्छाओं से भरी इच्छाएँ **-कुमार अम्बुज** 197
ज़फ़र पनाही से एक बातचीत **'ओपन डेमोक्रेसी'** 211

टिप्पणियाँ
इस्लामिक क्रांति पर एजाज़ अहमद-7/ दो गज़ ज़मीन भी न मिली-जितेन्द्र भाटिया-9
शहरयार मंदनीपौर-32/ ईरानी लेखक संघ का खत राष्ट्रपति के नाम-48/ होर्मुज जलडमरुमध्य-मुशर्रफ़ अली-77 नोबेल पुरस्कार से सम्मानित ईरान की महिलाएँ-अशोक तिवारी-146

पुस्तक समीक्षा :
'कुछ रंग थे ख्वाबों के'-**अशोक तिवारी**-169/ 'ईरान' -**अनन्या अग्रवाल**-174
दूब-**जीवन सिंह** -241/ देस बिराना-**हरियश राय**-245

स्मृतिशेष :
अलविदा मार्जान सतरापी! **प्रियदर्शन** 177
रघु राय : दुनिया में रहे, दुनिया के तलबगार न रहे **मनोज कुलकर्णी** 213
कथाकार-कवि-पत्रकार मधुसूदन आनंद **विष्णुनागर** 217
बेहतरीन अनुवादक बलवंत जेऊरकर **प्रफुल्ल शिलेदार** 230
अनंत कुमार सिंह : एक प्रतिबद्ध एवं दृष्टिसम्पन्न कथाकार **नीरज सिंह** 233

फिल्म समीक्षा :
मैं वापस आऊँगा **जवरीमल्ल पारख** 235

अपनी बात

हम फिलहाल ईरान के साथ हैं

ईरान के प्रति मेरी दिलचस्पी उस दिन से बढ़ी जब वर्तमान जंग के पहले ही दिन ईरानी राष्ट्रपति इमाम खामेनेई और उनके परिवार के पांच लोगों, कई परमाणु वैज्ञानिकों और मिलिट्री कमांडरों को अमरीका ने मौत के घाट उतार दिया लेकिन ईरान बड़ी मज़बूती से अपने रूख पर कायम रहा, उसने घुटने नहीं टेके और दुनिया ने देखा कि लाखों की संख्या में मर्द, औरतें व बच्चे अमरीका विरोधी नारे लगाते हुए सड़कों पर उतर आए। युद्ध शुरू होने के दिन (28 फरवरी) से 8 अप्रैल तक अमेरिका सेंट्रल कमांड के अनुसार ईरान के अंदर 10,000 सार्टीज़ की मदद से 1,30,000 लक्ष्यों को निशाना बनाया गया जिसने ईरान की मिसाइल उत्पादन क्षमता का 85 प्रतिशत नष्ट कर दिया, उसकी मिसाइल लाँच करने के इंफ्रास्ट्रक्चर के 70 प्रतिशत हिस्से को बर्बाद कर दिया और अधिकतर नेवी के जहाज़ों को डुबो दिया। ये प्रचारित आंकड़े कहाँ तक सही हैं, कोई नहीं जानता, लेकिन जो प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ रहा है कि अमरीका अपने घोषित लक्ष्यों (सत्ता में परिवर्तन, यूरेनियम संवर्धन पर रोक और ईरान की ताकत को मध्य–पूर्व क्षेत्र में कम करना) में से कोई एक भी पूरा नहीं कर पाया।

मध्य–पूर्व क्षेत्र में ईरान की स्थिति को कमज़ोर करना तो दूर, उस क्षेत्र के अमरीका के सहयोगी आज यह महसूस कर रहे हैं कि अपने देशों में अमरीकी अड्डों की इजाज़त देना उन्हें कितना महंगा पड़ रहा है। उन देशों को यह जानकारी भी हुई है कि जो मिसाइल डिफेंस सिस्टम उन्होंने बहुत मंहगी दर पर अमरीका के रक्षा उद्योगों से खरीदे थे, वे ईरान के सस्ते ड्रोनों और मिसाइलों के आगे बहुत नाकाफी सिद्ध हुए हैं जिसका परिणाम यह हुआ कि अमरीका के मध्य–पूर्व सहयोगी देशों ने खुद को आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा के

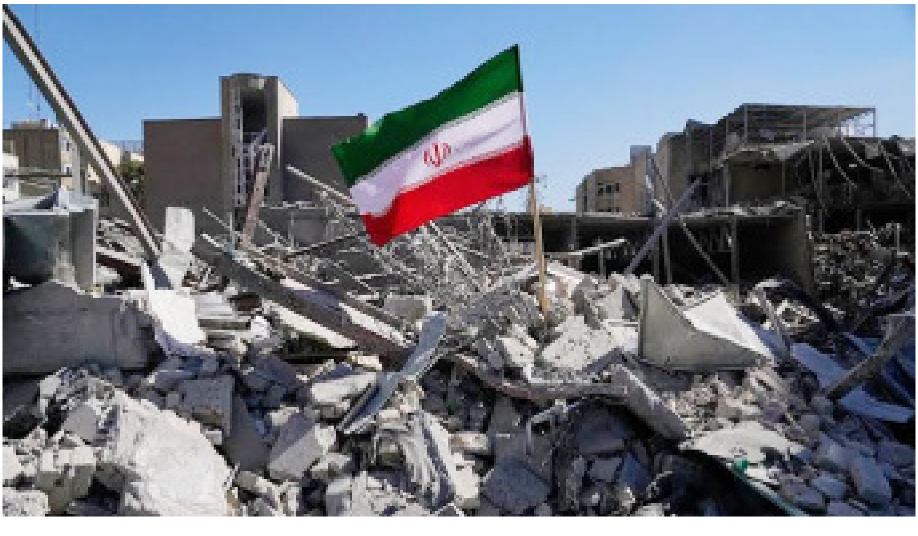

मामलों में आत्मनिर्भरता की ज़रूरत पर बल देना शुरू कर दिया है। ईरान ने जिस ढंग से अमरीका का मुकाबला किया है, उसने पश्चिमी एशिया के तमाम समीकरण बदल दिए हैं। अब इज़राइल और अमरीका के रिश्तों में भी थोड़ी खटास पैदा हुई है। बेशक आज भी अमरीका अपने पालतू कुत्ते को अपने नियंत्रण में रखे हुए है और उसे बचाने के लिए वह कोई कसर नहीं छोड़ेगा परन्तु यह भी सच है कि इस नियंत्रण में थोड़ी सी ढील विश्व व्यापार में अमरीका को बहुत नुकसान पहुंचा सकती है और अमरीका व उसके सहयोगी देशों की जनसंख्या को मुश्किल में डाल सकती है जिससे ट्रंप व सहयोगी देशों के सत्ताधारी वर्ग के नुमांइदों की रेटिंग बहुत गिर चुकी है। इस युद्ध ने अमरीका और यूरोप के रिश्तों में भी दरार डाल दी है। आर्थिक व राजनीतिक कारणों के अलावा, वहां विशेषकर पर्यावरण समूहों में इस बात की बहुत नाराज़गी है कि इतनी बड़ी संख्या में बमों का विस्फोट हमारी पावन पृथ्वी को नष्ट किए दे रहा है और जहां एक तरफ जान–माल का नुकसान हो रहा है, जो ज़िंदा बचते हैं, उनका वहां सांस लेना दूभर हो जाता है, वनस्पतियों और पशु–पक्षियों का नाश भी चिंता का विषय है। हर युद्ध इस नाश में इज़ाफा करता है। लिहाज़ा ट्रंप आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत बदनाम व्यक्ति है, नेतन्याहू तो है ही।

प्रायः अपने देश में जनता का अधिकांश हिस्सा सांप्रदायिकता के पागलपन के माहौल में बिना तथ्यों की जाँच किए उन तमाम सूचनाओं पर विश्वास कर लेता है जिनका प्राथमिक स्त्रोत पश्चिमी मीडिया और इंटरनेट है। आज प्रायः एक भारतवासी अपनी समृद्ध विरासत की अनदेखी कर रहा है और अपने 'विश्वगुरू' की देखा देखी ईरान के साथ अपनी हमदर्दी दिखाने में संकोच करता है केवल इसलिए कि वह एक मुस्लिम राष्ट्र है। विश्वगुरू ईरान पर हमले के केवल दो दिन पहले विश्व कुख्यात हत्यारे नेतन्याहू, जिसने गज़ा में 50000 बच्चों का कत्लेआम किया, से गले मिलने तेल अवीव गए और कई समझौतों पर हस्ताक्षर करके वापस लौटे। कहना न होगा कि ऐसे समझौतों से प्रायः अदानी–अंबानी को ही फायदा पहुंचाया जाता है जिनके प्रतिनिधि मोदी के शिष्ट मंडल में साथ जाते हैं।

इज़राइल द्वारा ईरान पर हमले का कोई लॉजिक नज़र नहीं आता। ईरान ने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर किए हुए हैं जबकि इज़राइल ने आज तक नहीं किए। दूसरे ईरान में सियासत के लिए एक फतवा लागू है कि वह कभी भी परमाणु बम नहीं बनायेगा। जबकि स्टॉकहोम इंटरनेशनल रिसर्च इंस्टिच्यूट के मुताबिक इज़राइल के पास 1 जनवरी, 2026 को 90 न्यूक्लियर बम थे, तब भी उसे उस देश से डर लग रहा है जिसने अभी तक एक भी बम नहीं बनाया है। इज़राइल ने बहुत ही बेहूदा तर्क दिया है कि अगर ईरान का परमाणु संवर्धन कार्यक्रम यूँ ही चलता रहा तो एक दिन वह न्यूक्लियर बम बना लेगा और इज़राइल के अस्तित्व को खतरा हो जाएगा। 1981 में यही तर्क देकर इज़राइल ने इराक के ओसीराक न्यूक्लियर रिएक्टर को नष्ट किया, इसी तरह मनगढ़ंत खुफिया रिपोर्टों के आधार पर अमरीका व उसके तत्कालीन यूरोपीय सहयोगियों को राज़ी किया जिसके फलस्वरूप उन्होंने इराक पर मार्च 2003 में, लीबिया पर दिसंबर 2011 में और ईरान पर जून, 2025 में हमले किये।

आज स्थिति यह है कि हत्या करना, धोखाधड़ी करना और दूसरे संप्रभु देशों की ज़मीन को हथियाना इज़राइल की आधिकारिक नीति बन चुकी है। मौत क्या चीज़ है, इज़राइल को